विनेश फोगाट विवाद पर फूटा महिला फुटबॉल की पूर्व कप्तान सोना चौधरी का गुस्सा- 'जब मैंने आवाज उठाई तो कैरेक्टर पर लगाए 'लांछन'

विनेश फोगाट जैसे लेवल का कोई खिलाड़ी जब कोई बात बोलता है तो ये अतिशयोक्ति नहीं है. इसमें ये सोचना ही नहीं है कि उसमें कोई बात ग़लत होगी या सच.

खिलाड़ी बहुत मुश्किल से बनते हैं. खिलाड़ी सिर्फ खुद स्ट्रगल नहीं करता है, उसका पूरा परिवार स्ट्रगल करता है. खिलाड़ी को बनाने के लिए उसके परिवार के कई लोगों का संघर्ष जुड़ा होता है. एक खिलाड़ी को बनाने के लिए परिवार का एक-एक इंसान बहुत मेहनता और त्याग करता है. इस लेवल पर पहुंचकर जब खिलाड़ी ऐसी हरकतों का शिकार होता है तो ये बहुत ही दुख की बात है. इसके लिए दुख बहुत छोटा शब्द है. मुझे अंदर से तकलीफ हो रही है. बोलने में भी ये शर्म की बात है.

मानसिक रूप से बीमार हैं वैसे लोग

जो इस तरह की घिनौनी हरकत करते हैं, उन्हें शर्म से डूब मर जाना चाहिए. मेरा मानना है कि उनके अंदर इंसानियत है ही नहीं, वो जिंदा ही नहीं है. मानसिक रूप से बीमार है और बीमार मानसिकता के लोगों का या तो हॉस्पिटल में इलाज होना चाहिए या ऐसे लोगों को जेल में होना चाहिए. मेरे पास ऐसे लोगों के लिए ये दो ही ऑप्शन हैं.

कार्रवाई की जगह मजे लेते हैं लोग

बेटियों की जिस तरह से परवरिश होनी चाहिए और जिस तरह की परवरिश होती है, इनमें जमीन-आसमां का फर्क है. हमारे हिन्दुस्तान को सोने की चिड़िया कहा जाता है, लेकिन यहां बेटियों के साथ हमेशा ही दोहरा मानक अपनाया जाता है. हकीकत कुछ और ही है. लड़कियों के लिए दोयम दर्जा पहले से ही निर्धारित किया हुआ है. तभी इस तरह की हरकतें हो रही हैं. वरना ऐसे लोगों को तो डर लगना चाहिए. उनकी सोच में भी वो डर होना चाहिए कि अगर हमने ऐसा सोचा या कहीं गलती से हमसे ऐसा कुछ हो गया तो हमारा जीवन नरक बन जायेगा. लेकिन ऐसी सोच कब बनेगी. ये तब होगा जब हम कार्रवाई करेंगे. लेकिन हमारे यहां ऐसा नहीं कर मजे लिया जाता है.

प्रूफ के लिए खिलाड़ी को ही क्यों बोला जाता है?

बहुत ही दुख की बात है की हमारे यहां शिकायत करने पर महिला खिलाड़ी को प्रूफ करने के लिए बोला जाता है कि क्या-क्या तुम्हारे साथ हुआ ? मतलब जितनी बार आप उस खिलाड़ी से सवाल करेंगे, इसका मतलब उतनी ही बार आप उसे फिर से उसी प्रताड़ना में भेज रहे हैं. फिर से आप उसको उसी दुखदायी स्थिति में वापस डाल रहे हैं. जितनी बार आप सवाल करेंगे, उतनी बार आप उसका एक हिस्सा तोड़ेंगे. हर बार उसके आत्म-सम्मान को ठेस पहुंचाएंगे. उसके स्वाभिमान को चोटिल करेंगे. इंडिया टीम में खेलने के बाद भी जब सोना चौधरी बोलती है कि ग़लत हो रहा है, तो क्या उसको फिर प्रूफ करने की जरुरत होनी चाहिए. विनेश फोगाट बोलती है कि ग़लत हो रहा है, तो क्या उसको प्रूफ करने की जरुरत होनी चाहिए. हम देश के लिए खेल चुके हैं, देश के लिए खुद को प्रूफ कर चुके हैं, उसके बावजूद भी ऐसी शर्मनाक हरकतों के लिए भी हमें प्रूफ देना होगा, तो शर्म हमें नहीं, उन लोगों को आनी चाहिए जो ग़लत कर रहे हैं या जो ग़लत चीजों पर भी कदम नहीं उठाते हैं.

पैरेंट्स को भरोसा दिलाना मुश्किल

हरियाणा में फुटबॉल की टीम नहीं थी, मुझे बोल दिया जाता था कि तुम्हें प्रैक्टिस तब करवाएंगे, जब टीम होगी. मैं पैरेंट्स के पास जाती थी लड़कियों को लाने तो, वे बोलते थे कि हम किसी पर भी भरोसा नहीं करेंगे. मैं हाथ जोड़-जोड़कर उनके पैरेंट्स को बोलती थी कि लड़कियां बहुत अच्छा खेलती हैं. वो खेलना चाहती थीं, लेकिन उनके घर वाले परमिशन नहीं देते थे. फुटबॉल के लिए बहुत मुश्किल से खिलाड़ी मिलते थे.

मुझे फुटबॉल का जुनून था. इस जुनून की वजह से ही मैं मेहनत कर टीम बनाती थी. मैं उस वक्त पैरेंट्स को बोलती थी कि आप अपने बेटियों को खेलने दीजिए. उसके साथ कुछ नहीं होने दूंगा और जो भी ग़लत करने की कोशिश करेगा तो मैं सोना चौधरी बीच में मजबूती से खड़ी रहूंगी. मैंने वैसा ही किया भी.

खिलाड़ी महत्वपूर्ण हैं, ऑफिसियल्स नहीं

चाहे स्टेट या नेशनल टूर्नामेंट हो, खेल संघ से जुड़े अधिकारियों के साथ उनके रिश्तेदारों को भी हवाई टिकट और रहने की अच्छी जगह मिल जाती है, इनकी औकात इतनी ही है. मेरा तो यहीं सवाल है कि ऐसे लोगों को खेल फेडरेशन में रखा ही क्यों जाता है. ग़लत काम करने वाले ऐसे लोगों को उठाकर खेल फेडरेशन से बाहर फेंक देना चाहिए. ये उसी वक्त कर देना चाहिए, जब कोई नामी-गिरामी खिलाड़ी बोलता है कि उसके साथ ग़लत हुआ. ऐसे मामलों में नो इन्क्वायरी, नो इनवेस्टीगेशन, तुरंत वैसे लोगों को बाहर निकाल देना चाहिए. जिस लेवल पर जाकर खिलाड़ी आरोप लगा रहा है, वहां पहुंचने के लिए खिलाड़ी ने खुद को तपाया है.

'आवाज उठाई तो कैरेक्टर पर लगाए लांछन'

ऐसे आरोप किसी लालच में आकर नहीं लगाए जाते. चाहे किताब हो या अलग-अलग जगह जाकर दी गई स्पीच, या फिर टीवी इंटरव्यू, मैंने हर जगह ये बात उठाई. जब मैंने ये बात उठाई तो कार्रवाई की जगह मेरे निजी जीवन पर ही लांछन लगाए गए. मेरे ही कैरेक्टर पर सवाल खड़े किए जाने लगे. सबसे अहम मुद्दा है कि खिलाड़ी महत्वपूर्ण है या ऑफिसियल. ऑफिसिलय तो आते-जाते रहेंगे. ये ग़लत कर रहे हैं, तो ऐसे मामलों में तो जांच की भी जरुरत नहीं है, तत्काल कार्रवाई करते हुए इन लोगों को बाहर निकाल देना चाहिए. खिलाड़ी का ख्याल हर हाल में रखा जाना चाहिए. खिलाड़ी देश के लिए खेलता है और आगे भी खेलेगा. मेरा मानना है कि खिलाड़ी कभी गलत नहीं हो सकते. खिलाड़ियों से ग़लत बर्ताव करने वाले लोगों को तो इंडिया में रहने के लिए भी जगह नहीं मिलनी चाहिए. ये देश के भी नहीं है. जो अपने देश की बच्चियों को लूटकर खा सकता है, उनपर भरोसा किया ही नहीं जाना चाहिए. खिलाड़ियों की ऐसी शिकायतों पर तुरंत एक्शन होना चाहिए.

समाज में लड़की अपनी जिन्दगी अपनी तरह जीना चाहे तो वह बेहद अकेली हो जाती है

हरियाणा खेल मंत्री पर ओलंपिक एथलीट द्वारा लगाए यौन शोषण के आरोपों पर भाजपा की राज्य सरकार के शर्मनाक ढुलमुल रवैए के बाद भारतीय कुश्ती फेडरेशन के अध्यक्ष भाजपा सांसद ब्रज भूषण सिंह की सरपरस्ती में अंतरराष्ट्रीय महिला पहलवानों के यौन शोषण का काफी समय से चल रहा स्कैंडल सामने आ गया है। बजरंग पूनिया, विनेश फोगाट, साक्षी मालिक जैसे नामी पहलवानों की अगुवाई में जंतर मंतर पर धरना दिया जा रहा है, और ठोस कार्यवाही के बजाय केंद्र सरकार का छल भरा दिखावा/सफाई अभियान सामने है।

हरियाणा की अंतरराष्ट्रीय महिला फुटबॉल कैप्टन सोना चौधरी के दो दशक पुराने उपन्यास 'पायदान' और 'गेम इन गेम' जीवंत दस्तावेज़ की तरह संबन्धित आयामों से परिचय कराते आए हैं। इन्हें आज व्यापक विमर्श में लाने की जरूरत है।

सोना चौधरी

पायदान : समाज में लड़की अपनी जिन्दगी अपनी तरह जीना चाहे तो वह बेहद अकेली हो जाती है। लड़की की तैयारी, उसके निर्णय, उसके प्रयास, उसके समझौते सब उसी की कीमत पर होने होते हैं। पारिवारिक विरोध और सामाजिक तिरस्कार की शुरुआती पायदानें यदि उसके निश्चय को डिगा नहीं पातीं तो अगले चरण की पायदानें होती हैं उसके श्रम और यौन के शोषण की। अंत में वह सफल हो या असफल, अगर जिंदगी अपनी तरह चुनना है तो ये पायदानें भी तय करनी ही होंगी। उसे प्रसिद्धि और पैसा मिल सकता है, वह कीर्तिमान बना सकती है, वह कैरियर एवं परिवार में तरक्की कर सकती है। पर तब तक इन पायदानों को तय करते करते उसकी जिंदगी का घुन खाया अस्तित्व ही सच्चाई के नाम पर बचा रह पायेगा।

सोना चौधरी ने इन अनुभवों को खुद बहुत करीब से देखा है। स्वस्थ दिखते समाज में भी लड़की मन से बीमार होती है। उपन्यास में प्रसंग बेचारगी से नहीं निर्ममता से उकेरे गये हैं। अकाल का मारा सड़े गले जानवर का गोश्त भी खा लेता है; बाढ़ से घिरा आदमी सीवर के सड़ांध-कीड़े भरे पानी में डुबकी लगाता जाता है; वेश्या का जीवन भी क्या जीवन हुआ पर वह भी छूटता है क्या! विकल्प न हो तो आपद्धर्म का तर्क हावी हो क्या नहीं कराता। समाज में लड़की की भी यही स्थिति है। उसके पास, यदि किस्मतवाली हुई तो, पायदानें चुनने का विकल्प होगा—शादी और संतान वाली पायदानें यानी श्रम और यौन को गिरवी रख परजीविता की प्राप्ति, या फिर कैरियर और कीर्तिमान वाली पायदानें यानी श्रम और यौन के मोल-भाव में लिपटी आत्मनिर्भरता। विकल्पहीनता में विकल्प इन जैसी पायदानों में ढूंढना है उसे।

तभी उपन्यास के दो अंत हैं पर शायद दोनो एक जैसे!

गेम इन गेम : स्त्री खिलाडियों के साथ 'खेल' की अंतर कथा, मतलब? मतलब ये कि यहाँ बर्बरता का शासन है। यहाँ कमजोर होकर चलने में सबकी ताकत का बोझा ढोना पड़ता है, ताकतवर होने के लिए कमजोरियों से समझौता करना पड़ता है। कहीं कुछ चुभता सा रहता है। कभी-कभी लगता है चारों तरफ फंस गई हूँ। जहाँ उजाला था उसे छोड़कर जहाँ आ गई हूँ वहाँ अंधेरा है, चारों और पेड़ों के घने झुरमुट हैं जो राह रोकते हैं और जहाँ सोचने-भर की जगह भी नहीं वहां भी काले जंगल हैं। सोचने की जो अकेली जगह मैं पहले घेर चुकी थी वे जंगल उस पर भी हमलावार हो रहे हैं। कुछ बंजर झाडियाँ सी उग आई हैं। इनमें कंटीली घास पनप रही है, सोचते-सोचते कई बार उद्विग्न हो जाती हूँ। फिर और सोचने लगती हूँ। सोचने की जगह नहीं पर सोचने से मुक्ति भी नहीं। जैसे कभी-कभी अपने ही मांस में अपने नाखून गड़ाते रहने पर खाल की तीखी जलन में भी कुछ मिलता सा है। जैसे कोई अपनी ही हथेली पर बेंत लगाता है और कुछ हासिल करता है। खेलने का मैदान, उससे जुड़ी यादें और ये सारे हादसे भी मेरे लिए ऐसे ही हैं। लेकिन फिर भी कुछ ऐसा है जो मुझे मजबूर करता है इस सबसे जुड़े रहने को।

-उपन्यास से